

व्यावसायिक वित्त के स्रोत

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» व्यावसायिक वित्त का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

प्रश्न 1 (आसान). व्यवसाय के लिए पैसों की ज़रूरत को क्या कहते हैं?

उत्तर – व्यावसायिक वित्त

प्रश्न 2 (आसान). बिना पर्याप्त धन के क्या कोई व्यवसाय चल सकता है?

उत्तर – नहीं

प्रश्न 3 (मध्यम). व्यावसायिक वित्त की आवश्यकता कब शुरू होती है?

उत्तर – जैसे ही व्यवसाय प्रारंभ करने का निर्णय लिया जाता है।

प्रश्न 4 (कठिन). एक कारखाने में मशीनें खरीदने के लिए किस प्रकार की पूंजी की आवश्यकता होगी - स्थायी पूंजी या कार्यशील पूंजी?

उत्तर – स्थायी पूंजी

» कोषों के स्रोतों का वर्गीकरण: अवधि के आधार पर

प्रश्न 5 (आसान). एक दुकान को हर महीने कर्मचारियों की तनखाह देने के लिए पैसे चाहिए। यह किस अवधि का वित्त स्रोत होगा?

उत्तर – अल्प अवधि

प्रश्न 6 (आसान). किसी कंपनी को नया ऑफिस बनाने के लिए लोन चाहिए, जो 8 साल में चुकाना है। यह किस प्रकार का स्रोत है?

उत्तर – दीर्घ अवधि

प्रश्न 7 (मध्यम). एक स्टार्टअप कंपनी को अगले 3 साल के लिए अपने प्रोडक्ट की मार्केटिंग करने के लिए पैसे चाहिए। वे किस अवधि के स्रोत का उपयोग करेंगे?

उत्तर – मध्य अवधि

प्रश्न 8 (कठिन). एक कपड़ा व्यापारी को दिवाली के लिए बड़ी मात्रा में कच्चा माल खरीदना है और उसे उम्मीद है कि वह 6 महीने में यह सब बेचकर पैसे वापस कर देगा। उसे किस अवधि के वित्त की आवश्यकता होगी और क्यों?

उत्तर – उसे 'अल्प अवधि' वित्त की आवश्यकता होगी क्योंकि यह आवश्यकता 1 वर्ष से कम, यानी 6 महीने की है।

» कोषों के स्रोतों का वर्गीकरण: स्वामित्व के आधार पर

प्रश्न 9 (आसान). प्रॉफिट का वह हिस्सा जो बिज़नेस में वापस लगा दिया जाए, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर – संचित आय (Retained Earnings)

प्रश्न 10 (आसान). बैंक से लिया गया कर्ज किस प्रकार का कोष है?

उत्तर – ऋणगत कोष

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर आप अपनी पुरानी कार बेचकर उस पैसे से नया बिज़नेस शुरू करते हैं, तो यह किस प्रकार का कोष होगा?

उत्तर – स्वामित्व कोष

प्रश्न 12 (कठिन). एक कंपनी ने डिबेंचर जारी किए। क्या डिबेंचर धारक कंपनी के मालिक होते हैं? अपने जवाब को स्वामित्व के आधार पर कोषों के वर्गीकरण के संदर्भ में समझाइए।

उत्तर – नहीं, डिबेंचर धारक कंपनी के मालिक नहीं होते। डिबेंचर 'ऋणगत कोष' का हिस्सा हैं, क्योंकि यह उधार लिया गया पैसा होता है जिस पर कंपनी को ब्याज देना होता है और एक निश्चित अवधि के बाद चुकाना होता है। मालिक केवल 'स्वामित्व कोष' (जैसे इक्विटी शेयर) वाले होते हैं।

» कोषों के स्रोतों का वर्गीकरण: आंतरिक एवं बाह्य सुविधाएँ

प्रश्न 13 (आसान). व्यवसाय के भीतर से जुटाए गए कोषों को क्या कहते हैं?

उत्तर – आंतरिक स्रोत

प्रश्न 14 (आसान). बैंक से लिया गया ऋण किस प्रकार का स्रोत है?

उत्तर – बाह्य स्रोत

प्रश्न 15 (मध्यम). संचित आय (retained earnings) आंतरिक स्रोत क्यों है?

उत्तर – क्योंकि यह व्यवसाय के खुद के कमाए हुए लाभ का हिस्सा है जिसे दोबारा व्यवसाय में ही लगाया जाता है।

प्रश्न 16 (कठिन). आंतरिक स्रोतों की तुलना में बाह्य स्रोतों से पूंजी जुटाना अक्सर अधिक महंगा क्यों होता है?

उत्तर – क्योंकि बाह्य स्रोतों में ब्याज, ब्रोकरेज, या अन्य शुल्क लगते हैं, और अक्सर संपत्तियों को गिरवी भी रखना पड़ता है।

» संचित आय: एक वित्तीय स्रोत

प्रश्न 17 (आसान). संचित आय किस प्रकार का वित्तीय स्रोत है?

उत्तर – आंतरिक स्रोत

प्रश्न 18 (आसान). क्या संचित आय पर ब्याज देना पड़ता है?

उत्तर – नहीं

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर एक कंपनी ने 5,00,000 रुपये का लाभ कमाया और 2,00,000 रुपये लाभांश के रूप में दिए, तो संचित आय कितनी होगी?

उत्तर – 3,00,000 रुपये

प्रश्न 20 (कठिन). संचित आय को 'स्थायी पूंजी' का स्रोत क्यों कहा जाता है?

उत्तर – क्योंकि यह पैसा कंपनी के अपने लाभ से आता है, इस पर कोई ब्याज या लाभांश नहीं देना होता, और यह लंबे समय तक कंपनी के पास रहता है, जिससे वित्तीय स्थिरता आती है और कंपनी को बाहरी स्रोतों पर निर्भरता कम होती है।

» व्यापारिक साख: एक अल्पकालिक स्रोत

प्रश्न 21 (आसान). व्यापारिक साख का अर्थ क्या है?

उत्तर – एक व्यापारी द्वारा दूसरे व्यापारी को वस्तुओं और सेवाओं की खरीद के लिए दी गई उधार सुविधा।

प्रश्न 22 (आसान). क्या व्यापारिक साख एक अल्पकालिक या दीर्घकालिक वित्त का स्रोत है?

उत्तर – यह एक अल्पकालिक वित्त का स्रोत है।

प्रश्न 23 (मध्यम). एक किराना स्टोर ने अपने सप्लायर से ₹20,000 का सामान 15 दिन के लिए व्यापारिक साख पर खरीदा। इससे स्टोर को क्या फायदा हुआ?

उत्तर – स्टोर को सामान तुरंत मिल गया और उसे 15 दिन तक भुगतान करने के लिए पैसे का इंतजाम करने का समय मिल गया।

प्रश्न 24 (कठिन). एक कंपनी ने अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए अपने ग्राहकों को व्यापारिक साख की सुविधा देना शुरू किया। इससे कंपनी को क्या लाभ और क्या जोखिम हो सकता है?

उत्तर – लाभ: बिक्री बढ़ेगी, ग्राहक आकर्षित होंगे। जोखिम: अगर ग्राहक भुगतान नहीं कर पाए, तो कंपनी को नुकसान हो सकता है और वित्तीय जोखिम बढ़ सकता है।

» आढ़त (Factoring): वित्तीय सेवा

प्रश्न 25 (आसान). आढ़त (Factoring) में कौन सी देनदारियां बेची जाती हैं?

उत्तर – ग्राहक से प्राप्त होने वाली देनदारियां या बिल।

प्रश्न 26 (आसान). Factoring में Factor किस चीज के बदले में पैसा देता है?

उत्तर – ग्राहक से मिलने वाले बिलों या इनवॉइस के बदले में, एक निश्चित कटौती पर।

प्रश्न 27 (मध्यम). आलंबन सहित (with recourse) और आलंबन रहित (without recourse) फैक्टरिंग में क्या अंतर है?

उत्तर – आलंबन सहित में भुगतान न होने का जोखिम विक्रेता का होता है, जबकि आलंबन रहित में फैक्टर जोखिम उठाता है।

प्रश्न 28 (कठिन). Factoring कैसे एक व्यवसाय के 'cash flow' को बेहतर बनाने में मदद करता है?

उत्तर – यह कंपनियों को ग्राहकों से प्राप्त होने वाले भुगतानों के लिए इंतजार किए बिना, अपने 'receivables' को तुरंत नकदी में बदलने की अनुमति देकर 'cash flow' को बेहतर बनाता है।

» लीज वित्तीयन: संपत्ति के उपयोग का अधिकार

प्रश्न 29 (आसान). लीज वित्तीयन में संपत्ति का मालिक क्या कहलाता है?

उत्तर – पट्टाकार (Lessor)

प्रश्न 30 (आसान). लीज व्यवस्था में संपत्ति का उपयोग करने वाला क्या कहलाता है?

उत्तर – पट्टाधारी (Lessee)

प्रश्न 31 (मध्यम). लीज वित्तीयन में पट्टाधारी संपत्ति का मालिक क्यों नहीं बनता है, समझाएं।

उत्तर – पट्टाधारी केवल संपत्ति के उपयोग का अधिकार प्राप्त करता है, मालिकी हक नहीं। उसे एक निश्चित अवधि के लिए किराए पर संपत्ति मिलती है, जिसके बदले वह आवधिक भुगतान करता है। अवधि समाप्त होने पर संपत्ति मालिक के पास लौट जाती है।

प्रश्न 32 (कठिन). किन परिस्थितियों में लीज वित्तीयन संपत्ति खरीदने से बेहतर विकल्प हो सकता है? कोई दो कारण बताएं।

उत्तर – लीज वित्तीयन तब बेहतर होता है जब संपत्ति बहुत महंगी हो और खरीदने के लिए पर्याप्त पूंजी न हो, या जब संपत्ति तेजी से अप्रचलित होने वाली हो (जैसे कंप्यूटर) और नए 'upgrades' की आवश्यकता हो। यह 'initial investment' को कम करता है और 'obsolescence risk' से बचाता है।

» सार्वजनिक जमा: जनता से सीधे वित्त

प्रश्न 33 (आसान). सार्वजनिक जमा क्या है?

उत्तर – जब कोई संगठन सीधे जनता से धन जमा करता है।

प्रश्न 34 (आसान). सार्वजनिक जमा से जुटाया गया धन किस अवधि की आवश्यकताओं के लिए उपयोगी है?

उत्तर – मध्य और लघु अवधि की आवश्यकताओं के लिए।

प्रश्न 35 (मध्यम). सार्वजनिक जमा में जमाकर्ताओं को बैंक की तुलना में ज़्यादा ब्याज मिलता है या कम?

उत्तर – सार्वजनिक जमा में जमाकर्ताओं को बैंक से अधिक दर से ब्याज मिलता है।

प्रश्न 36 (कठिन). सार्वजनिक जमा कंपनियों के लिए क्यों फायदेमंद हो सकता है, जबकि उन्हें जमाकर्ताओं को ज़्यादा ब्याज देना होता है?

उत्तर – क्योंकि कंपनियों के लिए सार्वजनिक जमा की कुल लागत (जैसे प्रोसेसिंग फीस आदि के बिना) बैंकों से ऋण लेने की कुल लागत से अक्सर कम होती है।

» वाणिज्यिक पत्र (Commercial Paper): असुरक्षित मुद्रा बाजार लेख-पत्र

प्रश्न 37 (आसान). वाणिज्यिक पत्र को _____ के रूप में जारी किया जाता है।

उत्तर – वचन पत्र

प्रश्न 38 (आसान). वाणिज्यिक पत्र जारी करने के लिए _____ की आवश्यकता नहीं होती।

उत्तर – जमानत (सिक्योरिटी)

प्रश्न 39 (मध्यम). वाणिज्यिक पत्र किस प्रकार के वित्त का साधन है - अल्पकालिक या दीर्घकालिक?

उत्तर – अल्पकालिक

प्रश्न 40 (कठिन). कौन सी फर्में वाणिज्यिक पत्र जारी करने में सक्षम होती हैं?

उत्तर – केवल अच्छी वित्तीय स्थिति और उच्च क्रेडिट रेटिंग वाली फर्में।

» समता अंशों का निर्गमन: स्वामित्व पूंजी

प्रश्न 41 (आसान). समता अंश कंपनी की कौन सी पूंजी होती है - स्वामित्व या ऋणगत?

उत्तर – स्वामित्व पूंजी

प्रश्न 42 (आसान). समता अंशधारक कंपनी के कौन होते हैं?

उत्तर – मालिक (Shareholders)

प्रश्न 43 (मध्यम). समता अंशों का निर्गमन मुख्यतः किस प्रकार की पूंजी के लिए किया जाता है - अल्पकालिक या दीर्घकालिक?

उत्तर – दीर्घकालिक पूंजी

प्रश्न 44 (कठिन). समता अंशों के माध्यम से पूंजी जुटाने का सबसे बड़ा फायदा क्या है?

उत्तर – यह स्थायी पूंजी होती है, जिसे वापस नहीं करना पड़ता और इस पर कोई निश्चित ब्याज नहीं देना होता।

» पूर्वाधिकार अंशों का निर्गमन: प्राथमिकता वाले अंश

प्रश्न 45 (आसान). पूर्वाधिकार अंशों को लाभांश भुगतान में क्या मिलती है?

उत्तर – प्राथमिकता

प्रश्न 46 (आसान). अगर कंपनी बंद होती है, तो पूंजी वापसी में किन्हें पहले पैसा मिलता है?

उत्तर – पूर्वाधिकार अंशधारकों को

प्रश्न 47 (मध्यम). क्या पूर्वाधिकार अंशधारकों के पास आमतौर पर मतदान का अधिकार होता है?

उत्तर – नहीं

प्रश्न 48 (कठिन). पूर्वाधिकार अंशों को 'preference shares' क्यों कहा जाता है?

उत्तर – क्योंकि उन्हें लाभांश भुगतान और पूंजी वापसी में समता अंशधारकों से पहले प्राथमिकता मिलती है।

» ऋण-पत्र (Debentures): दीर्घकालिक ऋणगत पूंजी

प्रश्न 49 (आसान). क्या ऋण-पत्र धारक कंपनी के मालिक होते हैं?

उत्तर – नहीं, ऋण-पत्र धारक कंपनी के लेनदार होते हैं।

प्रश्न 50 (आसान). ऋण-पत्र धारकों को क्या मिलता है - लाभांश या ब्याज?

उत्तर – ऋण-पत्र धारकों को निश्चित ब्याज मिलता है।

प्रश्न 51 (मध्यम). ऋण-पत्र किस तरह की पूंजी जुटाने का स्रोत है?

उत्तर – ऋण-पत्र दीर्घकालिक ऋणगत पूंजी जुटाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

प्रश्न 52 (कठिन). 'परिवर्तनीय ऋण-पत्र' से आप क्या समझते हैं? 'गैर-परिवर्तनीय' से वह कैसे भिन्न हैं?

उत्तर – 'परिवर्तनीय ऋण-पत्र' वे होते हैं जिन्हें एक निश्चित अवधि के बाद कंपनी के 'समता अंशों' में बदला जा सकता है। जबकि 'गैर-परिवर्तनीय ऋण-पत्र' को 'समता अंशों' में नहीं बदला जा सकता, उन्हें परिपक्वता पर नकद में चुकाया जाता है।

» वाणिज्यिक बैंक: विभिन्न उद्देश्यों और अवधियों के लिए वित्त

प्रश्न 53 (आसान). वाणिज्यिक बैंक किस प्रकार के वित्तीय स्रोत हैं? (अल्पकालिक / दीर्घकालिक)

उत्तर – दोनों, अल्पकालिक और दीर्घकालिक।

प्रश्न 54 (आसान). क्या वाणिज्यिक बैंक द्वारा दी गई जानकारी गोपनीय रहती है?

उत्तर – हाँ, गोपनीय रहती है।

प्रश्न 55 (मध्यम). एक व्यवसाय को अचानक काम करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। वाणिज्यिक बैंक द्वारा दी जाने वाली कौन सी सुविधा सबसे अच्छी होगी?

उत्तर – अधिविकर्ष (Overdraft) या नकद साख (Cash Credit)।

प्रश्न 56 (कठिन). वाणिज्यिक बैंकों से ऋण लेने की दो मुख्य सीमाएँ क्या हैं?

उत्तर – प्रक्रिया जटिल और समय लेने वाली हो सकती है, और बैंक कठिन शर्तें लगा सकते हैं।

» वित्तीय संस्थान: औद्योगिक विकास के लिए सहायता

प्रश्न 57 (आसान). वित्तीय संस्थानों का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर – औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना।

प्रश्न 58 (आसान). क्या वित्तीय संस्थान 'अल्पकालिक वित्त' प्रदान करते हैं?

उत्तर – नहीं, वे मुख्य रूप से 'दीर्घकालिक और मध्यकालिक वित्त' प्रदान करते हैं।

प्रश्न 59 (मध्यम). वाणिज्यिक बैंकों से वित्तीय संस्थान कैसे भिन्न हैं? कोई एक मुख्य अंतर बताओ।

उत्तर – वाणिज्यिक बैंक विभिन्न अवधियों के लिए वित्त देते हैं जबकि वित्तीय संस्थान मुख्यतः 'दीर्घकालिक और मध्यकालिक वित्त' पर केंद्रित होते हैं और उनका मुख्य उद्देश्य 'औद्योगिक विकास' होता है।

प्रश्न 60 (कठिन). वित्तीय संस्थानों से वित्त प्राप्त करने की किन्हीं दो 'सीमाओं' का वर्णन करें।

उत्तर – पहला, इनकी 'ऋण देने के लिए कड़े मानदंड' होते हैं और प्रक्रिया लंबी व खर्चीली होती है। दूसरा, ये 'ऋण लेने वाली कंपनी पर कुछ प्रतिबंध' लगा सकते हैं, जैसे लाभांश भुगतान पर रोक, या 'निदेशक मंडल में अपने प्रतिनिधि' नियुक्त कर सकते हैं, जिससे कंपनी के अधिकारों पर अंकुश लग जाता है।

» कोषों के स्रोत के चयन को प्रभावित करने वाले तत्व

प्रश्न 61 (आसान). यदि किसी कंपनी को केवल 6 महीने के लिए पैसे चाहिए, तो 'दीर्घकालिक ऋण' लेना सही होगा या 'अल्पकालिक ऋण'?

उत्तर – 'अल्पकालिक ऋण' सही होगा।

प्रश्न 62 (आसान). क्या 'समता अंश' जारी करने से कंपनी पर 'ब्याज चुकाने का निश्चित बोझ' पड़ता है?

उत्तर – नहीं, 'समता अंश' पर 'ब्याज' नहीं, बल्कि 'लाभांश' दिया जाता है, और वो भी केवल 'लाभ' होने पर।

प्रश्न 63 (मध्यम). एक कंपनी 'बहुत ज्यादा जोखिम' नहीं लेना चाहती और 'निश्चित भुगतान' से बचना चाहती है। उसे 'डिबेंचर' जारी करने चाहिए या 'समता अंश'?

उत्तर – उसे 'समता अंश' जारी करने चाहिए क्योंकि इसमें 'निश्चित भुगतान' का कोई 'दायित्व' नहीं होता और 'जोखिम' कम होता है।

प्रश्न 64 (कठिन). एक कंपनी जो 'लगातार लाभ' कमा रही है और अपने 'संस्थापकों का नियंत्रण' बनाए रखना चाहती है, लेकिन 'अपने वित्तीय भार' को कम करना चाहती है। उसे कौन से 'कोष के स्रोत' चुनने चाहिए और क्यों?

उत्तर – कंपनी को 'संचित आय' (Retained Earnings) का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि यह 'सबसे सस्ता' होता है, 'नियंत्रण' पर कोई 'प्रभाव' नहीं डालता और 'कोई नया जोखिम' पैदा नहीं करता। अगर अधिक वित्त चाहिए तो 'ऋण' (Debt) पर भी विचार किया जा सकता है क्योंकि 'लाभ' हो रहा है तो 'ब्याज चुकाना आसान' होगा और 'कर लाभ' भी मिलेगा, जबकि 'नियंत्रण' बना रहेगा।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए राम एक छोटी कपड़े की दुकान खोलना चाहते हैं। उन्हें दुकान के लिए क्या-क्या प्रारंभिक वित्तीय आवश्यकताएँ होंगी?

- › सबसे पहले, राम को दुकान के लिए जगह किराए पर लेनी होगी या खरीदनी होगी, जिसके लिए 'स्थायी पूंजी' (Fixed Capital) की जरूरत होगी।
- › फिर, दुकान को सजाने के लिए फर्नीचर, डिस्प्ले रैक और लाइटिंग लगानी होगी, यह भी 'स्थायी पूंजी' का हिस्सा है।
- › इसके बाद, बेचने के लिए कपड़े का स्टॉक खरीदना होगा, जो 'कार्यशील पूंजी' (Working Capital) में आएगा।
- › हर महीने दुकान का किराया, बिजली का बिल, और अगर कोई सहायक रखा है तो उसकी सैलरी देने के लिए भी 'कार्यशील पूंजी' चाहिए होगी।
- › इन सभी खर्चों के लिए पैसे का इंतज़ाम करना ही राम के लिए 'व्यावसायिक वित्त' का प्रबंधन होगा।

उत्तर – राम को दुकान खोलने के लिए प्रारंभिक स्थायी पूंजी (जैसे जगह, फर्नीचर) और कार्यशील पूंजी (जैसे स्टॉक, किराया, वेतन) की आवश्यकता होगी।

उदाहरण 2. एक फैक्ट्री को नई मशीन खरीदने के लिए ₹10 लाख चाहिए, जो कम से कम 7 साल तक चलेगी। उन्हें यह पैसा किस 'अवधि' के स्रोत से लेना चाहिए?

- › पहला कदम है समझना कि मशीन की उम्र कितनी है, यानी वो कितने समय तक काम आएगी। यहाँ मशीन 'कम से कम 7 साल' चलेगी।
- › अब वर्गीकरण के नियम याद करो: 'दीर्घ अवधि' के स्रोत 5 साल से ज्यादा की ज़रूरतों के लिए होते हैं।
- › चूंकि मशीन की आवश्यकता 7 साल की है, जो 5 साल से अधिक है, इसलिए फैक्ट्री को 'दीर्घ अवधि' के स्रोत से पैसा लेना चाहिए।

उत्तर – फैक्ट्री को 'दीर्घ अवधि' के वित्त स्रोतों का उपयोग करना चाहिए।

उदाहरण 3. एक नई कंपनी ने बाज़ार से 5 लाख रुपये के इक्विटी शेयर जारी किए और 2 लाख रुपये का बैंक लोन लिया। पहचानिए इनमें से कौन सा स्वामित्व कोष है और कौन सा ऋणगत कोष?

- › पहला, 'इक्विटी शेयर' जारी करना। जब कोई कंपनी इक्विटी शेयर बेचती है, तो जो लोग खरीदते हैं, वो कंपनी के मालिक बन जाते हैं।
- › तो, 5 लाख रुपये के 'इक्विटी शेयर' कंपनी के 'स्वामित्व कोष' का हिस्सा हुए।
- › दूसरा, 'बैंक लोन' लेना। बैंक से लिया गया लोन एक उधार होता है जिस पर ब्याज देना होता है और उसे वापस भी करना होता है।
- › तो, 2 लाख रुपये का 'बैंक लोन' कंपनी के 'ऋणगत कोष' का हिस्सा हुआ।

उत्तर – 5 लाख रुपये के इक्विटी शेयर 'स्वामित्व कोष' हैं और 2 लाख रुपये का बैंक लोन 'ऋणगत कोष' है।

उदाहरण 4. एक मोबाइल दुकान अपने रोज़मर्रा के खर्चों को पूरा करने के लिए कौन से दो मुख्य स्रोतों का उपयोग कर सकती है, अगर एक स्रोत आंतरिक हो और एक बाह्य?

- › सबसे पहले हमें सोचना होगा कि दुकान के 'अंदर' ऐसे कौन से पैसे हो सकते हैं जो इस्तेमाल किए जा सकें। दुकान की रोज़ की बिक्री से जो लाभ बचता है, जिसे हम 'संचित आय' कहते हैं, वह एक आंतरिक स्रोत है।
- › अब हमें 'बाहर' से आने वाले पैसे के बारे में सोचना है। दुकान बैंक से 'अल्पकालिक ऋण' ले सकती है, या फिर सप्लायर से कुछ समय के लिए 'व्यापारिक साख' ले सकती है (मतलब बाद में भुगतान करने का वादा)।
- › तो आंतरिक स्रोत के लिए 'संचित आय' या 'अतिरिक्त स्टॉक बेचकर' पैसा जुटाया जा सकता है।
- › और बाह्य स्रोत के लिए 'बैंक से अल्पकालिक ऋण' या 'व्यापारिक साख' का इस्तेमाल किया जा सकता है।

उत्तर – आंतरिक स्रोत: दुकान की संचित आय (retained earnings) या अतिरिक्त स्टॉक को बेचना। **बाह्य स्रोत:** बैंक से अल्पकालिक ऋण (short-term loan) या व्यापारिक साख (trade credit)।

उदाहरण 5. एक कंपनी का शुद्ध लाभ (Net Profit) 10,00,000 रुपये है। कंपनी ने शेयरधारकों को 4,00,000 रुपये लाभांश (Dividend) के रूप में दिए। तो संचित आय कतिनी होगी?

- › पहला कदम: हमें कंपनी का कुल शुद्ध लाभ देखना है, जो कि 10,00,000 रुपये है।
- › दूसरा कदम: इसमें से वह राशि घटानी है जो शेयरधारकों को लाभांश के रूप में दी गई, यानी 4,00,000 रुपये।
- › गणना: 10,00,000 (शुद्ध लाभ) - 4,00,000 (लाभांश) = 6,00,000 रुपये।

उत्तर – संचित आय 6,00,000 रुपये होगी।

उदाहरण 6. एक फर्नीचर की दुकान को ₹50,000 का लकड़ी का सामान चाहिए। सप्लायर ने उसे 30 दिन की व्यापारिक साख की सुविधा दी है। इस स्थिति को समझाओ।

- › फर्नीचर की दुकान को ₹50,000 का लकड़ी का सामान तुरंत मिल जाएगा।
- › उसे अभी सप्लायर को कोई भुगतान नहीं करना होगा।
- › सप्लायर के हिसाब से, फर्नीचर की दुकान उसका 'लेनदार' बन जाएगी।
- › फर्नीचर की दुकान को 30 दिनों के भीतर ₹50,000 का भुगतान करना होगा।

उत्तर – इस तरह, फर्नीचर की दुकान ने 'व्यापारिक साख' का उपयोग करके बिना तुरंत भुगतान किए अपनी ज़रूरत पूरी कर ली।

उदाहरण 7. मान लीजिए एक कंपनी XYZ ने ABC कंपनी को ₹1,00,000 का माल उधार पर बेचा, 90 दिनों की क्रेडिट अवधि पर। XYZ को अगले ही हफ्ते ₹95,000 की तत्काल आवश्यकता है। एक फैक्टर कंपनी 8% प्रति वर्ष की दर से फैक्टरिंग सेवा प्रदान करती है और बकाया राशि पर 2% 'सर्विस चार्ज' लेती है। XYZ कंपनी फैक्टरिंग का उपयोग कैसे करेगी?

- › XYZ कंपनी अपने ₹1,00,000 के इनवॉइस को फैक्टर कंपनी को बेचेगी।
- › फैक्टर 90 दिनों के लिए 8% वार्षिक ब्याज दर से 'discount' काटेगा। $(₹1,00,000 * 8\% / 365 * 90 \text{ दिन} = \text{लगभग ₹1,972})$
- › फैक्टर 2% 'सर्विस चार्ज' काटेगा। $(₹1,00,000 \text{ का } 2\% = ₹2,000)$
- › कुल कटौती: ₹1,972 (ब्याज) + ₹2,000 (सर्विस चार्ज) = ₹3,972।
- › फैक्टर XYZ कंपनी को अग्रिम रूप से ₹1,00,000 - ₹3,972 = ₹96,028 का भुगतान करेगा।
- › फैक्टर कंपनी ABC कंपनी से 90 दिनों के बाद पूरे ₹1,00,000 वसूल करेगी। यदि फैक्टरिंग 'आलंबन रहित' (non-recourse) है, तो ABC द्वारा भुगतान न करने का जोखिम फैक्टर का होगा।

उत्तर – XYZ कंपनी को तत्काल ₹96,028 प्राप्त होंगे और ABC कंपनी से वसूली का जोखिम फैक्टर कंपनी का होगा (यदि 'आलंबन रहित' फैक्टरिंग है)।

उदाहरण 8. एक नई 'printing machine' की कीमत ₹50 लाख है। एक कंपनी इसे खरीदने की बजाय 5 साल के लिए 'लीज' पर लेने का सोच रही है, जिसमें मासिक 'लीज किराया' ₹1 लाख है। बताएं कि 5 साल में कंपनी कुल कितना 'लीज किराया' चुकाएगी?

- › मासिक लीज किराया = ₹1,00,000
- › कुल महीने = 5 साल * 12 महीने/साल = 60 महीने
- › कुल लीज किराया = मासिक लीज किराया * कुल महीने
- › कुल लीज किराया = ₹1,00,000 * 60

उत्तर – कंपनी 5 साल में कुल ₹60 लाख का लीज किराया चुकाएगी।

उदाहरण 9. एक कंपनी को एक साल के लिए ₹10,000,000 की ज़रूरत है। बैंक 7% ब्याज पर लोन दे रहा है, लेकिन कंपनी जनता से 'सार्वजनिक जमा' के रूप में 8% ब्याज पर पैसा जुटाने का फैसला करती है। कंपनी को इससे कितना फायदा होगा?

- › पहले, बैंक से लोन लेने पर कितना ब्याज देना पड़ता, वह निकालते हैं: $10,000,000 * 7\% = ₹700,000$ ।
- › अब, सार्वजनिक जमा से कितना ब्याज देना पड़ेगा, वह निकालते हैं: $10,000,000 * 8\% = ₹800,000$ ।
- › लेकिन, यहाँ हमें यह समझना होगा कि कंपनी का फायदा जमाकर्ताओं की तुलना में है। 'कंपनियों के लिए जमा की लागत बैंकों से ऋण लेने की लागत से कम होती है।' मान लीजिए, बैंक लोन में प्रोसेसिंग फीस और अन्य खर्च मिलाकर कुल लागत 9% पड़ती है।
- › तो बैंक लोन की कुल लागत: $10,000,000 * 9\% = ₹900,000$ ।
- › सार्वजनिक जमा की लागत (सिर्फ ब्याज): ₹800,000।
- › तो कंपनी का शुद्ध फायदा = ₹900,000 - ₹800,000।

उत्तर – कंपनी को ₹100,000 का फायदा होगा, क्योंकि उसे बैंक से लोन लेने की तुलना में कम लागत पड़ेगी।

उदाहरण 10. एक कंपनी 'शाइन लिमिटेड' को 6 महीने के लिए ₹20 करोड़ की अल्पकालिक पूंजी की आवश्यकता है। कंपनी की क्रेडिट रेटिंग बहुत अच्छी है। कंपनी इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए वाणिज्यिक पत्र (CP) जारी करने पर विचार कर रही है। समझाइए कि कंपनी CP का उपयोग कैसे कर सकती है और उसे क्या फायदे और नुकसान हो सकते हैं।

- › पहला कदम: शाइन लिमिटेड को अपने वित्तीय सलाहकारों के साथ बैठकर यह तय करना होगा कि उन्हें कितने रुपये के CP, किस ब्याज दर पर और कितनी अवधि के लिए जारी करने हैं।
- › दूसरा कदम: वे फिर निवेशकों (जैसे बैंक, अन्य बड़ी कंपनियाँ, या वित्तीय संस्थाएँ) को ये CP बेचेंगे। क्योंकि कंपनी की क्रेडिट रेटिंग अच्छी है, निवेशक उस पर भरोसा करके CP खरीद लेंगे।
- › तीसरा कदम: 6 महीने बाद, जब CP की अवधि पूरी हो जाएगी (इसे 'परिपक्वता तिथि' कहते हैं), तो शाइन लिमिटेड को निवेशकों को उनके मूलधन (₹20 करोड़) और तय किया गया ब्याज लौटाना होगा।
- › फायदे: शाइन लिमिटेड को बिना किसी जमानत के तुरंत ₹20 करोड़ मिल जाएंगे। CP जारी करने की लागत बैंक लोन से कम होगी, और यह एक लचीला विकल्प है क्योंकि कंपनी अपनी ज़रूरत के हिसाब से अवधि चुन सकती है।
- › नुकसान: अगर शाइन लिमिटेड वित्तीय संकट में आ जाती है और पैसा वापस नहीं कर पाती, तो CP धारक भुगतान की तारीख आगे नहीं बढ़ा सकते। साथ ही, CP जारी करने की राशि निवेशकों के पास उपलब्ध अतिरिक्त नकदी पर निर्भर करती है।

उत्तर – शाइन लिमिटेड आसानी से ₹20 करोड़ जुटा सकती है, लेकिन भुगतान की जिम्मेदारी तय समय पर पूरी करनी होगी।

उदाहरण 11. एक कंपनी ₹50 लाख की स्थायी पूंजी जुटाना चाहती है और प्रति समता अंश ₹100 का मूल्य रखती है। कंपनी को कितने समता अंश जारी करने होंगे?

- › पहला कदम, हमें कुल पूंजी पता है: ₹50,00,000.
- › दूसरा कदम, हमें एक अंश का मूल्य पता है: ₹100 प्रति अंश.
- › अब, कुल पूंजी को एक अंश के मूल्य से भाग देंगे ताकि अंशों की संख्या मिल सके.
- › अंशों की संख्या = कुल पूंजी / प्रति अंश मूल्य
- › अंशों की संख्या = ₹50,00,000 / ₹100

उत्तर – तो, कंपनी को 50,000 समता अंश जारी करने होंगे।

उदाहरण 12. एक कंपनी ने ₹100 के 10,000, 10% पूर्वाधिकार अंश और 50,000 समता अंश जारी किए हैं। अगर कंपनी को ₹50,000 का शुद्ध लाभ होता है, तो पूर्वाधिकार अंशधारकों को कितना लाभांश मिलेगा?

- › पूर्वाधिकार अंशों की कुल राशि = 10,000 अंश × ₹100/अंश = ₹10,00,000
- › पूर्वाधिकार लाभांश की दर = 10%
- › पूर्वाधिकार अंशधारकों को देय लाभांश = ₹10,00,000 का 10% = ₹1,00,000

उत्तर – पूर्वाधिकार अंशधारकों को ₹1,00,000 का लाभांश मिलेगा। (यह लाभांश शुद्ध लाभ से ज़्यादा है, मतलब कंपनी को पूरा लाभांश देने के लिए और 'profit' चाहिए होगा या पिछले साल के 'reserve' का इस्तेमाल करना पड़ सकता है। इस उदाहरण में, कंपनी के पास सिर्फ ₹50,000 का लाभ है, तो उसे अधिकतम ₹50,000 ही बांटना होगा, और अगर 'cumulative preference shares' नहीं हैं तो शेष अगले साल नहीं मिलेगा। यह एक महत्वपूर्ण 'point' है!)

उदाहरण 13. एक कंपनी ₹100 वाले 5000 ऋण-पत्र 10 साल की अवधि के लिए जारी करती है, जिस पर 9% वार्षिक ब्याज दर है। प्रत्येक वर्ष कंपनी को कितना ब्याज भुगतान करना होगा?

- › ऋण-पत्रों का कुल अंकित मूल्य = ऋण-पत्रों की संख्या × प्रत्येक ऋण-पत्र का मूल्य
- › = 5000 × ₹100 = ₹5,00,000
- › वार्षिक ब्याज दर = 9%
- › प्रत्येक वर्ष देय कुल ब्याज = कुल अंकित मूल्य × वार्षिक ब्याज दर
- › = ₹5,00,000 × 9/100

उत्तर – प्रत्येक वर्ष कंपनी को ₹45,000 का ब्याज भुगतान करना होगा।

उदाहरण 14. एक छोटा प्रिंटिंग प्रेस मालिक श्री गुप्ता को नई प्रिंटिंग मशीन खरीदने के लिए 5 लाख रुपये की ज़रूरत है। मशीन की उम्मीदवारी 5 साल है। कौन सा वित्तीय स्रोत श्री गुप्ता के लिए सबसे उपयुक्त रहेगा और क्यों?

- › पहला, हमें श्री गुप्ता की ज़रूरत को समझना होगा। उन्हें 5 लाख रुपये चाहिए और यह एक 'दीर्घकालिक' ज़रूरत है क्योंकि मशीन 5 साल चलेगी।
- › दूसरा, हम देखेंगे कि कौन से स्रोत इस 'दीर्घकालिक' ज़रूरत को पूरा कर सकते हैं। डिबेंचर बड़ी कंपनियों के लिए ज्यादा होते हैं।
- › तीसरा, 'वाणिज्यिक बैंक' इस मामले में एक अच्छा विकल्प हो सकते हैं क्योंकि आजकल बैंक 'दीर्घकालिक ऋण' भी देते हैं, जिसे 'टर्म लोन' कहा जाता है।
- › चौथा, बैंक से लोन लेने के कुछ फायदे हैं जैसे 'गोपनीयता' और 'ऋण राशि में लचीलापन'। हाँ, उन्हें कुछ 'गिरवी' (collateral) रखना पड़ सकता है।
- › अंत में, बैंक 'किश्तों' में भुगतान की सुविधा भी देते हैं, जिससे श्री गुप्ता के लिए 5 साल में लोन चुकाना आसान हो जाएगा।

उत्तर – श्री गुप्ता के लिए 'वाणिज्यिक बैंक' से 'टर्म लोन' (आवधिक ऋण) लेना सबसे उपयुक्त रहेगा, क्योंकि यह उनकी 5 साल की 'दीर्घकालिक' आवश्यकता को पूरा करेगा और बैंक 'किश्तों' में भुगतान की सुविधा और 'गोपनीयता' जैसे लाभ भी देंगे।

उदाहरण 15. मान लीजिए एक कंपनी 'ABC Textiles' तमिलनाडु के तिरुपुर में एक बहुत बड़ी कपड़ा मिल लगाना चाहती है, जिसमें 500 करोड़ रुपये का निवेश होगा और यह 15 साल में वापसी की उम्मीद करती है। इसे लंबी अवधि के लिए वित्त की आवश्यकता है। वाणिज्यिक बैंकों से इसे पर्याप्त सहायता नहीं मिल रही। 'ABC Textiles' किस प्रकार के 'वित्तीय स्रोत' का उपयोग कर सकती है और क्यों?

- › पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'ABC Textiles' को 'दीर्घकालिक और बड़ी मात्रा में वित्त' चाहिए (15 साल के लिए 500 करोड़ रुपये)।
- › दूसरा कदम: वाणिज्यिक बैंक आमतौर पर इतनी लंबी अवधि और इतनी बड़ी राशि के लिए वित्त प्रदान करने में संकोच करते हैं या उनकी शर्तें बहुत कठिन होती हैं।
- › तीसरा कदम: ऐसे में 'ABC Textiles' को 'वित्तीय संस्थानों' की मदद लेनी चाहिए। ये संस्थान 'औद्योगिक विकास'

को बढ़ावा देने के लिए बने हैं और विशेष रूप से 'दीर्घकालिक वित्त' प्रदान करते हैं।

› चौथा कदम: ये संस्थान 'केवल धन' ही नहीं, बल्कि 'वित्तीय, प्रबंधकीय और तकनीकी सलाह' भी प्रदान करते हैं, जो एक नई बड़ी मिल लगाने में बहुत मददगार होगी। साथ ही, इनसे 'ऋण लेने से कंपनी की पूँजी बाज़ार में साख बढ़ जाती है', जिससे भविष्य में अन्य स्रोतों से भी फंड जुटाना आसान होगा।

उत्तर – ABC Textiles को 'वित्तीय संस्थानों' (जैसे IFCI, IDBI) का उपयोग करना चाहिए क्योंकि ये बड़े 'औद्योगिक विकास' परियोजनाओं के लिए 'दीर्घकालिक' और 'बड़ी मात्रा में वित्त' प्रदान करते हैं, साथ ही विशेषज्ञ सलाह और बेहतर 'बाजार साख' भी देते हैं।

उदाहरण 16. एक नई स्टार्टअप कंपनी को 5 साल के लिए 50 लाख रुपये का वित्त चाहिए। कंपनी की वित्तीय स्थिति अभी बहुत मजबूत नहीं है, और संस्थापक अपना 'नियंत्रण' बनाए रखना चाहते हैं। कंपनी के लिए सबसे उपयुक्त 'कोष का स्रोत' क्या होगा?

› पहला कदम: हमें देखना होगा कि 'अवधि' क्या है? यहाँ 5 साल है, मतलब 'मध्यम अवधि' या 'दीर्घ अवधि' की आवश्यकता है।

› दूसरा कदम: 'कंपनी की वित्तीय शक्ति' अभी मजबूत नहीं है, जिसका मतलब है कि 'निश्चित ब्याज' वाले विकल्प जैसे डिबेंचर या लोन उन पर बहुत 'वित्तीय भार' डाल सकते हैं अगर लाभ ना हो।

› तीसरा कदम: 'संस्थापक अपना नियंत्रण बनाए रखना चाहते हैं'। इसका मतलब है कि 'समता अंश' जारी करना शायद ठीक नहीं होगा क्योंकि इससे 'वोटिंग अधिकार' दूसरों के पास जा सकते हैं, जिससे उनका 'नियंत्रण कम' होगा।

› चौथा कदम: 'जोखिम' और 'लागत' भी देखनी होगी। अगर 'कम जोखिम' वाला विकल्प देखें और 'नियंत्रण' भी बना रहे तो, 'संचित आय' (अगर हो तो) या 'पार्टनरशिप' के माध्यम से पैसा जुटाना एक अच्छा विकल्प हो सकता है, लेकिन स्टार्टअप में 'संचित आय' कम होती है।

› पांचवां कदम: ऐसे में, अगर 'कठोर शर्तों' वाले लोन से बचना है, तो शुरुआत में 'वेंचर कैपिटल' या 'एंजेल इन्वेस्टर्स' से फंड लेना एक अच्छा विकल्प हो सकता है, जो 'नियंत्रण' में थोड़ा 'समझौता' भले कराएँ, पर 'जोखिम' और 'वित्तीय भार' को 'कम' करते हैं, और 'लंबी अवधि' के लिए होते हैं। या फिर ऐसे 'ऋण' जो 'परिवर्तनीय' हों।

उत्तर – ऐसी स्थिति में, कंपनी को 'वेंचर कैपिटल' या 'एंजेल इन्वेस्टर्स' से 'परिवर्तनीय ऋण' (Convertible Debt) या 'पसंदीदा स्टॉक' (Preferred Stock) पर विचार करना चाहिए, जो 'जोखिम' को बांटते हैं और 'तत्काल नियंत्रण' को बहुत ज्यादा कम नहीं करते, जबकि 'भविष्य में इक्विटी' के विकल्प खुले रखते हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- इस टॉपिक से 'स्थायी पूँजी' और 'कार्यशील पूँजी' के बीच अंतर और उनके उदाहरण अक्सर परीक्षा में पूछे जाते हैं, इन्हें अच्छे से समझना।
- अवधि के आधार पर वर्गीकरण और हर अवधि के कुछ उदाहरण बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं। इन उदाहरणों को ध्यान से याद कर लेना।
- यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर, 'आंतरिक और बाह्य स्रोतों में अंतर' या 'प्रत्येक के दो-दो उदाहरण' पर सीधा प्रश्न आता है। इनके फायदे और नुकसान भी ध्यान से पढ़ना।
- संचित आय के गुण और सीमाएँ, दोनों ही बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। खासकर 'गुण' अक्सर पूछे जाते हैं, जैसे कि यह 'स्थायी पूँजी' का स्रोत है या इस पर 'कोई लागत' नहीं आती।
- व्यापारिक साख के 'लाभ' और 'सीमाएँ' याद रखना, ये बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे पूछे जाते हैं।
- आदत (Factoring) के 'गुण' और 'सीमाएँ' बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। खासकर 'आलंबन सहित' और 'आलंबन रहित' फैक्ट्रिंग के बीच का अंतर उदाहरण के साथ समझाना सीख लें।
- लीज वित्तीयन के फायदे और नुकसान, खासकर 'capital outflow' और 'obsolescence risk' वाले बिंदुओं को उदाहरणों के साथ अच्छी तरह से याद करके जाएँ, ये अक्सर 4-6 नंबर के प्रश्न में पूछे जाते हैं।

- सार्वजनिक जमा के 'गुण और सीमाएँ' परीक्षा में अक्सर 3-5 नंबर के प्रश्न के रूप में आते हैं, इसलिए इन्हें ध्यान से याद करें।
- यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत जरूरी है। 'Commercial Paper' के लाभ और सीमाएँ अक्सर 3 या 5 नंबर के प्रश्न में पूछे जाते हैं, इन्हें अच्छे से याद कर लेना।
- समता अंशों और ऋण-पत्रों (Debentures) के बीच अंतर बोर्ड परीक्षाओं में एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न होता है। इनके गुणों, सीमाओं और अंतर को बहुत अच्छे से तैयार कर लेना।
- पूर्वाधिकार अंशों के 'features' और 'types' बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3-4 अंक के प्रश्न के रूप में आते हैं, इसे अच्छे से समझ लेना।
- बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'ऋण-पत्र' और 'अंश' के बीच अंतर पूछा जाता है। उनके 'अर्थ', 'भुगतान', 'अधिकारों' और 'कंपनी में स्थिति' के आधार पर अंतर को अच्छे से समझना। इनके 'गुण' और 'सीमाएँ' भी याद रखना।
- वाणिज्यिक बैंकों के 'गुण और सीमाओं' पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, इन्हें अच्छे से याद कर लेना।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें 'लाभ और सीमाएँ' तथा 'वित्तीय संस्थानों के प्रकार' पर अक्सर प्रश्न आते हैं। अलग-अलग संस्थानों जैसे IFCI, IDBI, LIC के 'कार्यक्षेत्र' और 'उद्देश्य' को अच्छे से समझना बहुत जरूरी है।
- यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अक्सर 'केस स्टडीज' के रूप में प्रश्न आते हैं जहाँ आपको किसी कंपनी की स्थिति देखकर 'सबसे उपयुक्त वित्त स्रोत' का सुझाव देना होता है और अपने चुनाव के 'कारण' बताने होते हैं। सारे 'तत्वों' को अच्छे से समझना और याद रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

- › व्यावसायिक वित्त: व्यवसाय के संचालन हेतु आवश्यक धन, जीवन रक्षक।
- › कोषों के स्रोत: अवधि के आधार पर – दीर्घ (>5 वर्ष), मध्य (1-5 वर्ष), अल्प (<1 वर्ष)
- › कोषों के स्रोत: आंतरिक (भीतर से) और बाह्य (बाहर से) सुविधाएँ।
- › संचित आय = लाभ का पुनः विनियोग; आंतरिक, स्थायी स्रोत, कोई ब्याज नहीं।
- › व्यापारिक साख = व्यापारी से व्यापारी को अल्पकालिक उधार सुविधा।
- › Factoring: देनदारियाँ फैक्टर को बेचना, तुरंत नकदी, वसूली जोखिम फैक्टर का।
- › लीज वित्तीयन = संपत्ति का उपयोग का अधिकार + आवधिक भुगतान, स्वामित्व नहीं।
- › सार्वजनिक जमा: जनता से सीधा धन, मध्य/लघु अवधि, बैंक से अधिक ब्याज, कम लागत।
- › CP: असुरक्षित अल्पकालिक मुद्रा बाजार लिखित, बना जमानत, केवल उच्च साख वाली फर्में।
- › समता अंश: दीर्घकालिक स्वामित्व पूंजी; मालिक, वोटिंग अधिकार, उच्च जोखिम/उच्च लाभ।
- › लाभांश व पूँजी वापसी में प्राथमिकता वाले अंश; मतदान अधिकार नहीं।
- › ऋण-पत्र: दीर्घकालिक ऋणगत पूंजी, लेनदार, निश्चित ब्याज, कोई मतदान अधिकार नहीं।
- › वाणिज्यिक बैंक: विभिन्न अवधियाँ हेतु वित्त, गोपनीयता, लचीलापन; सीमाएँ: जटिल प्रक्रिया, शर्तें।
- › सरकारी वित्तीय संस्थान, दीर्घकालिक/मध्यकालिक वित्त, औद्योगिक विकास हेतु, लाभ/सीमाएँ।
- › लागत, शक्ति, उद्देश्य, अवधि, जोखिम, नियंत्रण, कर लाभ वित्त स्रोत चयन के तत्व हैं।